सही बातें
उपाय

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

प्रकाशक

समर्पण समूह

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

संपादन / सहयोग

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज
सहजानंदी श्रमण सहजसागर जी मुनिराज

कृति का नाम

सही बातें
उपाय

संस्करण

2023 : 1008 प्रतियाँ

प्राप्ति स्थान

भोपाल : 91790-50222
जबलपुर : 98276-07171
इन्दौर : 98260-10104
इन्दौर : 94253-16840
भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन एवं मुद्रण :
डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर
मो. 98260-14047

शुभाशीष...

वस्तु स्वभाव में परिणामी एवं अपरिणामी है। द्रव्य-दृष्टि से अपरिणामी व पर्याय दृष्टि से परिणामी, पर जो इस सत्य को नहीं जानता वह दूसरे के लिए बोलता है - अमुक व्यक्ति बदल गया, जबकि वह स्वयं भी बदला है। एक-ही समय में परिणाम व अपरिणाम धर्म विद्यमान रहता है, इस **सही बात** को जो जानता है, वह सत्यज्ञाता पर में दोषों का अन्वेषण नहीं करता है, अपितु वस्तु के वस्तुत्व को सम्यक् जानकर मध्यस्थ हो जाता है।

इसी भावना से ओत-प्रोत **तत्त्वान्वेषी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी ने ''सही बातें''** नामक कृति का सृजन कर वागीश्वरी के कोष को वर्धमान किया है। वे इसी प्रकार सम्यक् श्रुताभ्यास पूर्वक साहित्य-सृजन कर के संस्कृति का संवर्धन करें, यही शुभाशीष है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनिराज

मेरी बात-सही बात

अनेकों चिंतकों ने अपने अभिनव, अभिजात और आत्मोन्मुखी चिंतन से इस भारतीय तत्त्वमनीषा के वाङ्मय को सुसंवर्धित किया है। वही चिंतन समीचीन-चिंतन कहलाता है, जो सिद्धांत, तर्क और पूर्वाचार्यों की कथनी से मेल खाता है।

हर व्यक्ति की बातें सही नहीं होती और हर व्यक्ति की बातें गलत भी नहीं होती, कई बार समझने का नज़रिया भी गलत होता है। इस कृति के सृजन का हेतु ऐसे ही कुछ गलत नज़रियों को सही करना है।

विश्ववंद्य प्रभु वर्धमानस्वामी के अहिंसामय सत्यार्थ सिद्धांत जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये शब्द और भाषा दोनों ही जनपद संबंधी होना अनिवार्य है। इसी कारण से यह सृजन गुरुप्रसाद, आगमाध्ययन, स्वानुभव और स्वयुक्ति के साथ-साथ सुगम शब्द और भाषा से मैंने अभिसिंचित किया है।

आशा है लघुकृत्य के रूप में प्रस्तुत मेरी कुछ **सही बातें** चिरकाल से प्रचलित गलत बातों को चिरकाल तक सही रखने में सहायक बनेगी।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

सही बातें
उपाय

अच्छा बनने की
कोशिश जरूर करो,
पर
कभी अपने आपको
अच्छा साबित करने की
कोशिश मत करो;
आप तो सिर्फ
अच्छाइयाँ बढ़ाते जाइये
सब अपने आप
साबित हो जायेगा...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विषम परिस्थितियों में भी
दुःखों को नहीं
आनंद को खोजिये,
दुःख ढूँढ़ने से
दुःख बढ़ता है
और
आनंद लूटने से
आनंद सौ गुना हो जाता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी
कोई दुःखी हो
तब उससे
दुःखी होने का कारण न पूछकर,
उसके दुःख
दूर करने का उपाय बतलाना चाहिये,
क्योंकि
कारण पूछने से
वह सुखी नहीं होगा;
उपाय बतलाने से ही
वह सुखी हो पायेगा ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
उपाय

गलतियाँ मिटाने का
केवल एक ही उपाय है
'पछतावा',
गलतियाँ करके
वे ही सुधर पाते हैं
जिन्हें पछतावा होता है;
जिन्हें पछतावा नहीं होता
उनकी गलतियाँ
दिन-दोगुनी
रात-चौगुनी बढ़ जाती हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन्हें भी
रिश्तों को बनाये रखने की
भावना हो,
उन्हें दो बातें
ध्यान रखना चाहिये;
पहला तो
गुस्से का त्याग करना चाहिये
और फिर
दूसरों के गुस्से को
दिल में नहीं लेना चाहिये...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया में
बदलाव लाने की ताकत
उन्हीं लोगों में हैं,
जो सबसे पहले
खुद को बदलते हैं;
जरा सोचिये –
जो खुद को नहीं बदल पाया
वो दुनिया को क्या बदल पायेगा...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे
समय में हुई मेघ वर्षा ही
अमृत है
और
असमय में हुई मेघ वर्षा
विष है,
वैसे ही
समय में बोले गये वचन ही
अमृत हैं
और
असमय में बोले गये वचन
विष हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अक्षर आप
अच्छे होने का दिखावा करते हैं,
पर
अंदर से
अच्छे बनने का भाव नहीं करते हैं;
तो आपसे बुरा इंसान
कोई और नहीं है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी नुकसान लगे
तब उससे प्राप्त अनुभव को
बड़ा संभालकर रखें,
क्योंकि
ये ही अनुभव
आगे होने वाले नुकसानों से
आपको बचायेगा...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीत का जश्न
कुछ इस तरह मनायें कि
हारने वाले के दिल में भी
ठेस न पहुँच पाये,
अगर
ठेस पहुँचती है
तो आप जीतकर भी
हारे ही हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सच्ची जीत
दूसरों को हराने में नहीं
खुद को
जीत तक पहुँचाने में है,
अगर
दूसरों को हराने की चाह है;
तो आप कभी जीत नहीं सकते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कुछ न मिलने पर
हम व्यर्थ ही
भगवान को दोष देते हैं,
जबकि भगवान
न तो कभी कुछ देते हैं
न ही कुछ लेते हैं;
वो तो अपने में लीन रहते हैं,
सच तो यह है कि –
हमारा किया कर्म ही
सब लेता–देता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

धन से
भगवान की मूरत
तो मिल सकती है,
मगर
धन से
भगवान की मूरत
दिल में नहीं बस सकती है;
दिल में बसाने का
सिर्फ एक ही तरीका है
वह है श्रद्धान...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया में
अच्छे लोगों की संख्या
अगर बढ़ाना है,
तो आप स्वयं अच्छे हो जाइये,
क्योंकि
आज के लोग
देखा-सीखी करने में माहिर हैं..

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शिक्षा का हक
लड़के-लड़की दोनों का है,
क्योंकि
जब लड़का शिक्षित होगा
तो परिवार को धन देगा;
पर
जब लड़की शिक्षित होगी
तो परिवार को
संस्कार देगी ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हमारा जीवन
रत्नों से भरे समुद्र के समान है,
मगर
यह हम पर निर्भर करता है कि
हम उसमें से
स्वयं के लिये
और
दूसरों के लिये
कितने और कौन से
रत्न निकालते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन्हें भी
नदी के पानी के समान
मीठा रहना हो,
उन्हें खारे समुद्र के समान
दुर्जन लोगों से दूर रहना चाहिये,
जैसे
एक बार समुद्र में मिलने पर
मीठी नदी खारी हो जाती है;
वैसे ही
दुर्जनों की संगति से
सज्जन लोग भी खारे हो जाते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हारते वो नहीं हैं
जो गिर जाते हैं,
हारते वो हैं
जो हिम्मत हार जाते हैं;
अगर
आप हिम्मत नहीं हारे
तो एक दिन
दुनिया को जीत सकते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

डर
एक ऐसा भाव है
जो आपको
तरक्की के साथ-साथ
खुश रहने से भी दूर रखता है,
इसलिये
जिन्हें भी
वर्तमान का आनंद लूटना हो,
उन्हें
डर को भूल जाना चाहिये...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिनसे कुछ नहीं बनता
वो तो
इस दुनिया पर भारभूत हैं ही,
पर
कुछ बनने पर भी
जो बने रहते हैं
कुछ नहीं करते हैं;
वो भी
इस दुनिया पर भारभूत हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बुरा समय आने पर
घबराइये मत
बुरा समय भी बहुत अच्छा है,
जब वह आता है
तो कष्ट देता है;
पर
जब जाता है
तब आत्मबल
और
अनुभव के साथ-साथ
इंसान की परख सिखा देता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हर किसी को
वाक्पटुता का वरदान
नहीं मिलता है,
यह तो
कुछ विरले लोगों को ही मिलता है;
इसलिये
वरदानों में सर्वश्रेष्ठ वरदान
वाक्पटुता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सज्जन लोगों की संगति
आपके अंदर
सज्जनता बढ़ाने के साथ-साथ
आपके अंदर
विलक्षण गुण भी उत्पन्न करती है,
इसलिये
सब कुछ छूट जाये,
पर
सज्जन की संगति
कभी न छूट पाये...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िंदगी में
हर चीज़ भाग्य से नहीं मिलती,
बहुत सी चीज़ों के लिये
मेहनत भी करनी पड़ती है,
चिड़िया को ही ले लीजिये
उसे भोजन-पानी तो
भाग्य से मिल जाता है;
पर
घर उसे
अपनी मेहनत से ही बनाना पड़ता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुद को अच्छा मानना
बुरा नहीं है,
पर
दूसरों को बुरा मानना
बुरा ही है,
ध्यान रखें –
अच्छाई–बुराई
कहीं और नहीं
हमारी दृष्टि में ही होती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुद को अच्छा मानना
अहंकार नहीं है,
खुद को
दूसरों से अच्छा मानना
अहंकार ही है,
आप खुद को
अच्छा तो मानिये;
पर
अहंकार से रहित होकर...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिस काम को करने के बाद
मन प्रसन्न हो
वही काम ठीक है
और
जिस काम को करने के बाद
मन में पछतावा हो
वही काम हीन है ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जितनी ताकत
खुद के दुःख सहने में नहीं लगती
उससे कई गुनी ताकत
दूसरों के सुख सहने में लगती है,
अगर आप
खुद के दुःख के साथ-साथ
दूसरों का सुख नहीं सह पाते हैं;
तो आप दुनिया के
सबसे कमज़ोर आदमी हैं ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

डर के सहारे
जीत कभी नहीं मिलती है
बुलंद हौसलों के बदौलत ही
जीत मिलती है,
डर से तो
जीत कोसों दूर चली जाती है;
इसलिये
डरें नहीं
अपने हौसलों को बुलंद करें...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किस्मत
लकीरों में नहीं लिखी होती,
किस्मत तो
कर्मों में लिखी होती है,
इसलिये
जैसे-जैसे कर्म निखरते हैं
वैसे-वैसे किस्मत भी निखरती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सफलता के
अनेकों सूत्र आपने पढ़े होंगे,
लेकिन
उन सूत्रों को
आप तभी समझ पायेंगे
जब आपका नज़रिया सही होगा;
नज़रिया गलत होने पर
वे सूत्र आपको
शत्रु जैसे लगेंगे...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िंदगी के हर काम को
आनंद
और
पूर्ण समर्पण के साथ करें ,
ऐसा करने से
धन और अनुभव
दोनों की पूँजी बढ़ेगी ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो तुम पर प्रसन्न हो
उससे कभी रूठना मत,
क्योंकि
अगर कहीं वो रूठ गया
तो फिर तुम उसे कभी
मना नहीं पाओगे ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

हम वही करते हैं
वही कहते हैं
जो हमें पसंद होता है,
हमें वह भी करना चाहिये
वह भी कहना चाहिये
जो दूसरों को भी पसंद हो...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो लोग
ज़्यादा की उम्मीदें न करके
जितना मिलता है
उसी में खुश रहते हैं,
ज़िंदगी उन्हें जल्द ही
उम्मीदों से कई गुना देती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कभी भी
किसी से भी
आशा न करें,
लेकिन
कोई आपसे आशा करे
तो उसे न तोड़ें
हमेशा पूरा करें...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब तक आपकी
उम्मीदें बरकरार हैं,
तब तक आपके जीवन में
आनंद भी बरकरार है,
उम्मीदें टूटते ही
जीवन भी टूट जाता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
अपनी उन्नति चाहते हैं,
तो अपने गुणों को
दिन-दोगुना
रात-चौगुना बढ़ाइये;
क्योंकि
उन्नति उन्हीं की होती है
जो गुणों से भरे होते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दूसरों के भरोसे जिओगे
तो सफल होने के साथ,
कमज़ोर भी होते जाओगे
और
खुद के भरोसे जिओगे
तो सफल होने के साथ,
ताकतवर भी होते जाओगे ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपको
वर्तमान का आनंद लूटना हो,
तो आप
भविष्य की चिंता छोड़ दो,
भविष्य की चिंता से
न तो वर्तमान अच्छा रहता है
न ही भविष्य...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी आपको
किसी की
सेवा का मौका मिले,
तो कभी मत छोड़ना;
क्योंकि
दूसरों की सेवा के ही कारण
वर्तमान और भविष्य में
आपकी सेवा होगी...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

शरीर के
सम्मान की इच्छा करना
आत्मा का
अपमान करना है,
मेरी यही नसीहत है–
जिससे आत्म–सम्मान घटे
ऐसे सम्मान से
अपनी रक्षा जरूर करें...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके जीवन में
कितने ही दुःख या कष्ट हों,
अगर आप उसे
समय पर छोड़ देते हैं
और
मुस्कुराना नहीं छोड़ते हैं;
तो वह दुःख या कष्ट
ज़्यादा दिन तक नहीं टिकेगा...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप ठान लें
तो क्या नहीं कर सकते हैं,
सोचिये
जब लोगों ने ठाना
तो हिमालय तक चढ़ गये
तो क्या आप
छोटी-मोटी झंझटों को
पार नहीं कर सकते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने आपको
बड़ा बनाने के लिये,
अपने व्यवहार में
बड़प्पन जगाइये,
क्योंकि
जिनके भी व्यवहार में
ओछापन रहता है
उनका बड़ा बन पाना;
मुश्किल ही नहीं
नामुमकिन सा रहता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कभी भी अपनों के बीच
आशंका की दीवार
खड़े मत होने देना,
वरना
थोड़े ही दिन में
आप अपनों से दूर
अकेले नज़र आयेंगे...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

तीर्थ वंदना
बहुत दुर्लभ है,
गुरु का सामीप्य
और भी दुर्लभ है;
मगर
गुरु सामीप्य में तीर्थ वंदना
दुर्लभ में दुर्लभ है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िंदगी का हर एक पल
हमें कुछ न कुछ
जरूर सिखाता है,
बुरे दिन हमें
समता सिखाते हैं
और
अच्छे दिन हमें
यादों को संजोकर रखने की
सही शिक्षा देते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप जब तक
भगवान न बनें,
तब तक
भगवान बनाते रहें;
ताकि एक दिन आप भी
भगवान बन सकें...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

यह तुम्हारा कर्तव्य है कि
जो तुम्हें खुशी दे
तुम भी उसे खुशी ही देना,
क्योंकि
ऐसा करने से
आप उससे
हमेशा खुशी पा सकते हैं ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बड़े बनने के लिये
बड़े समर्पण के साथ–साथ
बड़ा बलिदान भी जरूरी है,
अगर आप
बड़ा बलिदान नहीं कर सकते हैं,
तो आप
कभी बड़े भी नहीं बन सकते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके जीवन में आये
दुःखों का कारण
आप स्वयं है;
दूसरे निमित्त हो सकते हैं,
पर
वे दुःख आपके ही द्वारा
पूर्व में कमाये गये थे...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी गलती का एहसास
हर किसी को नहीं होता,
यह तो
उन्हें ही होता है
जिनका दिल साफ होता है,
जिनका दिल साफ नहीं होता
वे तो
गलती पर गलती करते जाते हैं
और
उसे गलती न मानकर
अपनी काबिलियत मानते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

इस दुनिया में
जब भी किसी की भी
लड़ाई होती है,
तो उसका कारण खोजने पर
दो ही कारण सामने आयेंगे –
पहला श्री
और
दूसरा श्रीमति...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपकी सारी इच्छायें
कड़ी मेहनत के बिना
अधूरी ही रहेंगी
और
बड़ी इच्छाओं की पूर्ति
कड़ी मेहनत से ही संभव है;
ये मेरा ही नहीं
सभी सफल लोगों का अनुभव है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब भी
आपकी इच्छा
दान करने की हो
तो इतना ध्यान जरूर रखें –
दान
दिखाने के लिये नहीं दें,
दिखने के लिये भी नहीं दें,
अपितु
दान
अपनी ताकत देखकर दें ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मित्रो !
अगर तुम्हें
कभी असफल न होना हो
तो श्री और स्त्री पर
विश्वास मत करना
और
गुरु और प्रभु का
विश्वास मत तोड़ना...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी गलतियाँ न दिख पायें
यह सोचकर
दूसरों की गलतियाँ
उज़ागर करना,
सबसे अच्छी नीति है ;
पर गौर से सोचिये –
सबसे गलत काम भी है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसा आप सोचेंगे
आपको अनुभवन भी
वैसा ही होगा,
इसलिये
अच्छे अनुभवन के लिये
अच्छी सोच जरूरी है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

धन कमाना
और
समय बचाना
जितना कठिन है,
इनका दुरुपयोग
उतना ही सरल है;
यह बात समझने के लिये
कहीं और नहीं
आसपास घूम रहे
लोगों को ही देख लीजिये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सारी दुनिया
सपनों को
हकीकत में बदलना चाहती है,
पर देखा जाता है
कुछ ही लोग
सपनों को साकार कर पाते हैं;
क्योंकि
कुछ ही लोग
जी–तोड़ मेहनत कर पाते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया के बीच रहना है
तो सहना है,
अगर नहीं सहा
तो नहीं रह पाओगे
और
कहीं रो पड़े
तो कुछ नहीं कर पाओगे ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपके अंदर
दूसरों के प्रति प्रतिस्पर्धा है
तो आप अधूरे हैं,
क्योंकि
दूसरों जैसा बनने की चाह
अथवा
दूसरों से आगे निकलने की चाह
अधूरेपन की निशानी है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कषाय की तीव्रता में
और
तीव्र भावुकता में
कोई निर्णय मत लेना,
वरना
पछतावे के सिवाय
कुछ नहीं मिलेगा ...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

गुज़रे वक्त के बारे में सोचेंगे
तो आज का वक्त भी गुज़र जायेगा
और
आज के वक्त को संभालेंगे
तो आने वाला वक्त सँवर जायेगा...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

छोटी–छोटी बातें
न तो दिल में रखें
न ही दिमाग में,
क्योंकि
अकसर छोटी–छोटी बातों से ही
बड़े– बड़े रिश्ते
टूटते देखे जाते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अच्छे भविष्य के लिये
अच्छे कल की जरूरत नहीं,
अच्छी सोच
और
सच्ची मेहनत की जरूरत है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बोलें कम
और
करें ज़्यादा,
सफलता के लिये
इससे छोटा और सुंदर सूत्र
कहीं नहीं मिलेगा...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप
जितनी आकांक्षायें बढ़ाते हैं,
उतनी ही असंतुष्टी बढ़ती है,
जिन्हें भी
संतुष्टी बढ़ाने की भावना हो
उन्हें आकांक्षायें
घटा देना चाहिये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

उपशम भाव
और
उपेक्षा भाव
जीत के सुन्दरतम उपाय हैं,
समय लग सकता है
पर जीत भी
लंबे समय के लिये मिलेगी...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुद का कल्याण
दूसरों के सुधार से नहीं
खुद के सुधार से संभव है,
इसलिये
दूसरों के सुधार से पहले
खुद के सुधार का विचार
अवश्य करें...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मुस्कुराते लोगों की संगति
बहुत लाजवाब होती है,
ऐसे लोग
भले ही कुछ न दें,
पर
आपके दिल को
खुशियों से जरूर भर देते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अच्छे भावों के साथ जीना
और
दूसरों को भी
अच्छे भावों के साथ जीने देना,
सरल स्वभावी लोगों की ही कला है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपकी जितनी हानि
कोई शत्रु करता है,
उससे अधिक हानि
आप झूठ बोलकर कर लेते हैं;
इसलिये
आपका सबसे बड़ा शत्रु
कोई और नहीं
आपके ही अंदर बैठा
झूठा इंसान है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दान
प्रसिद्धि के लिये नहीं
आत्म-सिद्धि के लिये दिया जाता है,
प्रसिद्धि के लिये दिया गया दान
सिद्धि में असहायक है,
पर
सिद्धि के लिये दिया गया दान
प्रसिद्धि जरूर दिलाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने दोष
उन्हें ही दिखते हैं
जो आत्म–हितार्थी होते हैं,
जिन्हें
आत्महित से कोई मतलब नहीं होता,
उन्हीं का अपने दोषों पर
ध्यान नहीं होता ...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुर्भाग्य को
भाग्य में बदलने का
सिर्फ और सिर्फ एक ही तरीका है
और वह है
सही–पुरुषार्थ,
सच मानिये–
अगर आपका
पुरुषार्थ सही होगा
तो दुर्भाग्य भी भाग्य में
अवश्य बदलेगा...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी को भी धोखा देना
उसके प्राण हरने के समान ही है,
क्योंकि
धोखा खाने के बाद
वह किसी पर भी
विश्वास नहीं कर पाता है
और
विश्वास न करने के कारण
ज़िंदगी भी
खुलकर नहीं जी पाता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दूसरों को
दिखाने के साथ–साथ
खुद को
देखने के लिये भी
कुछ–न–कुछ जरूर करें,
मेरे ख्याल से –
दिखाना जरूरी नहीं है
खुद को देखना ज़्यादा जरूरी है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बड़े–बड़े कामों को
सफल बनाने का
सिर्फ एक ही तरीका है
'धैर्य',
असल में
काम तो हर कोई करता है;
पर
धैर्य न होने के कारण
हर कोई सफल नहीं हो पाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

चिरायता
कड़वा लगता है
पर
रोग भगा देता है,
धैर्य भी
कड़वा लगता है,
पर
असफलता को भगा देता है;
इसलिये मुझे धैर्य
चिरायते की तरह लगता है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

धोखा देने में
सुख का अनुभव तो होता है,
पर
वह सुख
तलवार पर लगे
शहद को चाँटने वाला सुख होता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विश्वास तोड़ने पर
आप दो लोगों की
नज़रों से गिर जाते हैं
एक वो
जिसका विश्वास टूटा है
और
दूसरा वो
जिसने विश्वास तोड़ा है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

प्यार, बुद्धि और विवेक;
ये ऐसी शक्तियाँ हैं
जिनके बल पर
दुनिया में किसी से भी
आप काम करवा सकते हो,
फिर चाहे वह
क्रूर हिंसक सिंह हो
या फिर सीधी साधी गाय...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

वर्तमान का समय
कुछ अज़ब ही निराला है,
पहले लोग
घर के बाहर लिखते थे
यहाँ 'शर्माजी', 'पाठकजी' रहते हैं,
आजकल लिखते हैं–
'यहाँ कुत्ता रहता है'
पहले लोग
घर के बाहर लिखते थे
'पाप से सावधान'
आजकल लिखते हैं
'कुत्ते से सावधान'...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अशुभ समय से
बाहर निकलने का
सबसे सुदंर पासपोर्ट है
मौन,
क्योंकि
अशुभ के समय
आप सत्य भी बालेंगे
तो वह
असत्य ही माना जाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जरूरी नहीं
तुम भी मुझे समझ पाओ
अकसर लोग मुझे
नहीं पढ़ पाते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

वक्त और
हालात के साथ-साथ
पहनावा, शौक, खाना
रहन-सहन
मेरे दोस्त !
तुम सब बदलना
बस
तुम कभी मत बदलना...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ये वक्त बहुत चालाक है,
जवानी का लालाच देकर
बचपन छीन लेता है
और
अमीरी का लालच देकर
जवानी छीन रहा है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

तुम्हें क्या हक है
किसी को मतलबी कहने का,
तुम तो
खुद अपने भगवान को
मुसीबतों में याद करते हो...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

नासमझ ही रहते
तो ठीक थे हम,
जब से समझदार हुये हैं
उलझने बढ़ सी गई हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर